जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० – २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५४ वे ❖ अंक २–३ रा ❖ ऑक्टोबर–नोव्हेंबर २०२२ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०७९

या अंकात

विषय	पान नं.
• दीपावली पूजन विधी	२३
• दीपावली पूजन मुहूर्त	२७
• अंधकार में काफी भटके अब प्रकाश की ओर बढे	२९
• पटाखे मत फोडिये	३३
• दिल में जलाएँ धर्म का दिप	४३
• अंतिम महागाथा :	
✻ ४४ : भगवान आ गये है मुझे बचाने	४५
✻ ४५ : पुरुषार्थ से सिध्दी	५१
✻ ४६ : बूँद सागर में समा गई	५३
• आनंद, आशा, आस्था का पर्व दीपावली	५६
• शरीर की ही नहीं, मन की सफाई भी करें	६७
• प्रसन्नता के दो शिखर	७१
• जीवन के दो पंख – ज्ञान और कर्म	७७
• हास्य जागृति	८२
• मोक्ष मार्ग के २१ कदम : अहिंसा	९१
• पचक्खान आदमी के पाप करने से रोकने का काम करता है।	१०१
• अनावश्यक पापों से बचे	१०२
• धनतेरस पर स्नेह और सेवा का करे विकास	११५
• जिन शासन के चमकते हीरे	
✻ खंधक मुनि ✻ धन्ना अणगार	११९
✻ श्री स्कंदकाचार्य ✻ श्री वज्रबाहु	१२१
• नाती–गोती	१२४
• ऐसी हुई जब गुरुकृपा	१२५
• वीरत्थुई में भगवान महावीर के गुण	१२७
• धन्यवाद देने की कला सीखे	१३९
• दीपावली सभ्यता, संस्कृति का त्योहार	१४०
• जिन्दगी का फलसफा	१४२
• सुखी जीवन का मंत्र	१४३
• भाई–बहिन का प्यार	१४५

- दूध का कर्ज १४५
- रंगबिरंगी – रंग मोबाईल के १४७
- जीवन साफल्य : चतु:सुत्री १५०
- नाते मजबूत राखण्यासाठी १५३
- सुक्ती से मुक्ति – चारित्र/चरित्र १५५
- ज्ञान पंचमी १६०
- दीपावली सणाचे जैन धर्मातील महत्त्व १६३
- आजादी का अमृत महोत्सव १६७
- सूत्र संतति – नई दिल्ली में प्रदर्शन १७१
- भगवान महावीर २५५० वाँ निर्वाण कल्याणक १७२
- बीजीएस – परिचय सम्मेलन, पुणे १७३
- अरिहंत जागृति मंच, पुणे १७५
- महावीर जैन विद्यालय वसतीगृह १७६
- डॉ. रुणवालस् हृदयम् हार्ट केअर सेंटर, आनंदऋषिजी हॉस्पिटल, अहमदनगर १७९
- संसारी कौन ? संयमी कौन ? १८५
- दी पूना मर्चन्ट चेंबर – पुरस्कार १८७
- समग्र जैन चातुर्मास सूची विमोचन १८८
- जयवंत इव्हेन्टस् ॲण्ड एंटरटेन्मेंट प्रा. लि., १८९
- डायग्नोपिन, मुंबई – उद्घाटन १९१
- कु. करिष्मा कोठारी – उद्घाटन १९१
- अर्हम् कल्याण मित्र १९१
- वाचकांचे मनोगत १९२
- राहुल इंजिनियरींग ग्लोबल प्रा. लि. पुणे १९६
- श्री. गिरीषजी पारख, लोणावळा १९९
- बच्चों को प्रतिस्पर्धी के स्थान पर प्रगतिशील बनाएँ २०३
- माता–पिता की पूजा २०४
- ज्ञान–अज्ञान २०९
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत १०० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay, M. 9822086997/AT PAR चेक/पुणे चेकने/ RTGS / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२–१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

दीपावली पूजन विधी

मनुष्य के जीवन में उत्सवों का बड़ा महत्त्व है । उन पर्वों में दीपावली पर्व भारत वर्ष का एक श्रेष्ठतम पर्व है । दीपावली दीपोत्सव का, प्रकाशोत्सव का पर्व है । शक्ति, भक्ति और श्रध्दा का पर्व है । दीपक की शुभ ज्योति हमें ऊर्ध्वगमन का शुभ संदेश देती है, साथ ही अपने सान्निध्य में आनेवाले हर दीप को ही नहीं हर बुझे दीप को भी प्रकाशित करने का संदेश देती है । दीप से दीप जलते जाते हैं और दीपमाला बनकर दीपावली बन जाती है ।

यह पर्व मानव जीवन की पूर्णता और उसकी सार्थकता को जानने-समझने का पर्व है । हमारे भीतर अज्ञान का तमस छाया हुआ है, जो ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है । ज्ञान ही संसार में सबसे बड़ा एवं सर्वश्रेष्ठ प्रकाश है । जब ज्ञान का दीप जलता है, तब भीतर और बाहर दोनों ओर आलोक जगमगाता है ।

प्रभु महावीर के इस निर्वाण पर्व दीपावली के उपलक्ष में हम अहिंसा के दीप जलाये, मैत्री का प्रकाश फैलाये और आपस में प्रेमभाव बढ़ाने का प्रयास करें ।

जैन समाज में इस त्योहार का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन अमावस्या को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था । वे जन्म-मृत्यु के दुखों से मुक्त होकर मोक्ष गामी हुए । चतुर्दशी और अमावस्या ये दो दिन लगातार भ. महावीर स्वामी जनसमुदायों को अंतिमदेशना (उपदेश) देते रहे । वह उपदेश ही उत्तराध्ययन सूत्र है । जिसका पठन-पाठन श्रवण इन दिनों में किया जाता है । कई महानुभाव बडी श्रध्दा के साथ उपवास करते है । भ. महावीर का जाप करते हैं । पौषध के साथ उपवास करते हैं ।

कार्तिक सूद प्रतिपदा के दिन प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ । नए वर्ष के प्रात:काल में गौतमस्वामीजी का जाप किया जाता है । सभी भक्त जन सुबह गुरु भगवंतों के मुखारविंद से शुभ मांगलिक श्रवण करते है । मंत्र गर्भित स्तोत्र का श्रवण करते हैं। इसके बाद ही अपने कार्य का प्रारंभ करते हैं ।

दीपावली त्योहार हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है । - संपादक

दीपावली पूजन विधी

सर्व प्रथम घर के सभी सदस्य मंगलभावना के साथ तीन बार नवकार महामंत्र का भक्तिसे भर कर उच्चारण करे ।

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

तीर्थंकरों को वंदन

समवशरण का स्मरण कर पूर्व और उत्तर दिशा के बीच ईशान्य दिशा में महाविदेह क्षेत्र है वहाँ बीस विहरमान तीर्थंकर वर्तमान में विराजमान है अत: अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्हें तीन बार वंदन नमन करें ।

गुरु भगवंत को वंदन

जो गुरु आपने माने हैं उन्हें श्रध्दापूर्वक वंदना करना ।

- शुभ मुहूर्त पर गद्दी या गालीचा बिछाकर भ. महावीर स्वामीजी, श्री गौतम स्वामीजी, श्री लक्ष्मी देवी, श्री सरस्वती देवी के फोटो पूर्व या उत्तर दिशा में रखें।
- गद्दीपर नई बहियाँ (नोट बुक), बिल बुक, चेक बुक, सुवर्ण-चांदी या धातु के देवी देवताओं के सिक्के, नया पेन पूजा की सामग्री रखें ।
- पूजा के लिए साहित्य - खाने के पान डंढल सहित,

॥ ॐ अर्हम् नमः ॥

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री शुभ 卐 श्री लाभ

श्री आदिनाथाय नमः **श्री शांतीनाथाय नमः**

श्री पार्श्वनाथाय नमः **श्री महावीराय नमः**

श्री सद्गुरूभ्यो नमः

श्री गौतमस्वामी की लब्धि, श्री भरतजी की ऋध्दि, श्री अभयकुमारकी बुध्दि, श्री कयवन्नाजी का सौभाग्य, श्री धन्ना शालिभद्रजीकी संपत्ति, श्री बाहुबलीजीका बल, तथा श्री श्रेयांसकुमार की दानवृत्ती प्राप्त होवे !

श्री जिनशासन की प्रभावना होवे !

॥ श्री सरस्वती देवी नमः ॥ श्री महालक्ष्मी देवी नमः ॥

नूतन वर्ष

वीर संवत २५४९, विक्रम संवत २०७९

कार्तिक सुद १ बुधवार दि. २६/१०/२०२२

पूजन दिन सोमवार दि. २४/१०/२०२२

卐

सुपारी, लौंग, इलायची, कुंकुम, वासक्षेप, अक्षदा (चावल), श्रीफल (नारियल), फूल, घी का दीया, धूप, अगरबत्ती, जल, फल (Fruit), ईख (Sugar cane), नैवद्य (मिठाई), लक्ष्मी (झाडु), लाभ (लाह्या) बत्तासा, मोली, आरती के लिए कपूर।

- पूजा करनेवाला घर का मुखिया तीन नवकार मंत्र का जाप करके हाथ में मोली बाँधे । फोटो, सिक्के इनको तिलक लगाएँ अक्षदा चढावे ।
- गद्दी की दाहिनी तरफ घी का दीया और बायीं तरफ धूप अगरबत्ती लगाएँ । और साईड में ईख (Sugar cane) खडा रखें ।
- नवकार मंत्र बोलते-बोलते पेन, दीया, कलश, लक्ष्मी, ईख (Sugar cane) इ. को मोली बांधे । कुंकुम से तिलक करें ।
- नई बही के पहले पन्नेपर बाजु की चौकट का मायना लिखें ।

लिखने के बाद कुंकुम से स्वस्तिक निकालें । नई बहियाँ पिछले वर्ष की अकाऊंट की एक बही, बिल बुक, चेक पुस्तक, लक्ष्मी इ. सभीपर डंढल सहित एक पर एक दो पान रखें । उसपर एक रुपया और उसपर सुपारी, लौंग, इलायची रखें । हाथ में पानी लेकर बही के चारों ओर घुमावे । वासक्षेप, कुंकुम मिश्रित चावल के दाने हाथ में लेकर निम्न श्लोक और मंत्र बोलें ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ।
मंगलं स्थूलीभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।
मंत्र – ॐ आर्यावर्ते, आस्मिन् जंबूद्वीपे
दक्षिणार्धभरते भरतक्षेत्रे-भारतदेशे (पूना) नगरे
ममगृहे श्री शारदा देवी, श्री लक्ष्मीदेवी
आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

अक्षदा बहीपर अर्पण करें । बाद में निम्नलिखित स्तुति का पठन करें ।

॥ स्तुती ॥

स्वश्रीयं श्रीमद् अरिहंता, सिद्धः पुरीपदम्,
आचार्यः पंचधाचारं, वाचकां वाचनांवराम्।
साधवः सिद्धी साहाय्यं वितन्वन्तु विवेकिनाम्,

मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।
अर्हमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम्,
एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिन:।
हृत्पदं षोडशदलं, स्थापितं षोडशाक्षरम्
परमेष्ठिस्तुते बीजं, ध्यायेक्षरदूरदं मुदा ।
मंत्रणामादिमं मंत्रं, तंत्र विघ्नौघ निग्रहे,
ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिन प्रभा ।।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र जप करते-करते **जल, चंदन, पुष्प (फूल), धूप, दीप, अक्षदा (चावल), फल, नैवेद्य** इन आठ वस्तुओं से वही पूजन करें ।

ॐ ह्रीं श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै (जलं) समर्पयामि स्वाहा ।

दूसरी बार यही श्लोक बोलते हुए जल की जगह चंदन बोले इस प्रकार आठों ही वस्तुओं के नाम लेकर आठ बार यह श्लोक बोलें ।

पूजा में सभी सदस्य खडे होकर निम्नलिखित प्रार्थना बोलें ।

।। श्री सरस्वती स्तोत्र ।।

सकल लोक सुसेवित पंकजा
वर यशोर्जित शारद कौमुदी,
निखिल कल्मष नाशन तत्परा
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
कमल गर्भ विराजित भूधना,
मणि किरीट सुशोभित मस्तका,
कनक कुंडल भूषित कर्णिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
वसुहरिद् गज संस्नपितेश्वरी
विधृत सोमकला जगदीश्वरी,
जलज पत्र समान विलोचना
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
निज सुधैर्य जितामर भूधरा,
निहित पुष्कर वृंदल सत्कारा
समुदितार्क सदृतनु बल्लिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
विविध वांछित कामदुधाद्भूता,
विशद पद्म हृदान्तर वासिनी
सुमति सागर वर्धन चंद्रिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्र ।।

नमोस्तुते महालक्ष्मी महासौख्य प्रदायिनी
सर्वदा देही मे द्रव्यं, दानाय मुक्ती हेतवे ।। १ ।।
धनं धान्य धरां हर्ष, कीर्तिम्, आयु: यश: श्रियम्
वाहनाम् दन्तिन् पुत्रान, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे ।।२।।
यन्मया वांछितं देवी, तत्सर्वं सफलं कुरू
न बान्ध्यन्ता कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ।।३।।

।। प्रार्थना ।।

सुंदर आरोग्य निवास करे दृढ तन में ।
आशा, उत्साह, उमंग भरे शुचि मन में ।
न हो अनुचित योग प्रयोग धन साधन में ।
उत्कृष्ट उच्च आदर्श जगे जीवन में ।
तम मिटे, ज्ञानकी ज्योति जगत में छाये ।
प्रभु ! दिव्य दिवाली भव्य भाव भर लाये ।

इसके बाद एक थाली में दीया लेकर कपूर से आरती करे - निम्न आरती बोले ।

।। आरती ।।

सकल जिनंद नमी करी, जिनवाणी मन लाय ।
सरस्वति लक्ष्मी करू आरती, आतम सुगुरू पसाय ।।
ज्ञान जगत में सार हैं । ज्ञान परम हितकार ।
ज्ञान सूर्य से होता है, दुरित तिमिर अपहार ।।
श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान ।
ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ।।
श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास ।
पावे शिव सुख आतमा, इससे अविचल वास ।।
अष्टमपद विंशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान ।
तीर्थंकर पदवी लहे, आराधक भगवान ।।

आरती के बाद निम्नलिखित अष्टदोहे बोले ।

।। अष्टदोहे ।।

अंगुष्ठे अमृत वसे लब्धितणा भंडार ।
जय गुरू गौतम समरिये, वांछित फल दातार ।।१।।
प्रभू वचने त्रिपदी लही, सूत्र रचे तेणीवार ।
चऊदह पूरब माँ रचे, लोकालोक विचार ।।२।।

भगवति सूत्र कर नमी, बंभी लिपी जयकार ।
लोकलोकोत्तर सुख भणी, वाणी लिपी अढार ।।३।।
वीर प्रभू सुखिया थया, दिवाली दिन सार ।
अंतर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ।।४।।
केवलज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार ।
सुरनर पर्षदा आगले घट अभिषेक उदार ।।५।।
सुरवर पर्षदा आगले, भाखे श्री श्रुतनाण ।
नाण थकी जग जाणिये, द्रव्यादिक चौठाण ।।६।।
ते श्रुतज्ञान ने पुजिये, दीप धूप मनोहार ।
वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार ।।७।।
गुरू गौतम अष्टक कही, आणि हर्ष उल्लास ।
भाव भरी जे समरशे, पुरे सरस्वती आस ।।८।।

।। लोगस्स (चउव्वीसत्थव) का पाठ ।।

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।१।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंच वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चं।
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वध्दमाणं च ।।४।।
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा. तित्थयरा में पसीयंतु ।।५।।
कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

।। नमोत्थुणं का पाठ ।। (२ बार)

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, संय-संबुध्दाणं, परिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंध-हत्थीण, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं।

(दूसरे में - ठाणं संपाविउकामाणं णमो जिणाणं जियभयाणं)

(तिसरे में) णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसयस्स अणेगगुण संजुत्तस्स जाव संपविउ कामस्स ।

।। मंगलपाठ ।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते-सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे-सरणं पव्वज्जामि, साहू-सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तधम्मं सरणं पव्वज्जामि। अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररुपित दयाधर्म का शरणा। चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नहीं कोय, जो भवी प्राणी आदरे तो अक्षय अमरपद होय ।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फलदातार।
भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान ।
भावे धर्म आराधिये, भावे केवलज्ञान ।
पावे पद निर्वाण ।।

यहाँ दीपावली विधि संपन्न होती है । ●

दीपावली का यह दिन भगवान महावीर का निर्वाण दिन है अत: भगवान के फोटो के सामने बैठकर तन-मन को एकाग्र कर, रात्री में निम्न जप की २०-२० मालाएँ जपें ।

ॐ ऱ्हीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम:

बादमें

ॐ ऱ्हीं श्री महावीर स्वामी पारंगताय नम:

की मालाएँ गिनें अथवा यथाशक्ति जाप करें।

कार्तिक सूद प्रतिपदा की सूर्योदय से पूर्व स्नानादि के बाद नमस्कार महामंत्र का जप करें और

ॐ ऱ्हीं श्री गौतमस्वामी केवलज्ञानाय नम:

२० माला फेरें ।

फिर यह प्रार्थना बोले...

कुंदिंदुगोखीर तुसार वन्ना
सरोज हत्था कमले निसन्ना
वाएसिरी पुत्थय वग्ग हत्था
सुहायसा अम्ह सया पसत्था

इस प्रार्थना के बाद विद्या संपदा का महान ओजस्वी मंत्र का अवश्य जप करें (२० माला)

ॐ ऱ्हीं ॐ

जैन मंदिर या स्थानक, उपाश्रय में जाकर प्रभु का, संतों का दर्शन करें । मांगलिक श्रवण करें । गौतम स्वामी को मध्यरात्री के बाद भली सुबह केवलज्ञान प्राप्त हुआ अत: उस समय 'गौतम रास' अवश्य गावें ।

दीपावली की इस विधि का यथायोग्य पालन करें। सबका भला हो, मंगल हो, कल्याण हो । ●

सन २०२२ चे दीपावली पूजनाचे मुहूर्त

❖ **पुष्प नक्षत्र : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ८**

मंगळवार दि. १८-१०-२०२२ : ✻ सकाळी ९.३० ते ११.०० चल ✻ ११.०० ते १२.३० लाभ, ✻ १२.३० ते २.०० अमृत ✻ दुपारी ३.३० ते ५.०० शुभ ✻ रात्री ८.०० ते ९.३० लाभ, ११.०० ते १२.३० शुभ

बुधवार दि. १९-१०-२०२२ : ✻ सकाळी ६.३० ते ८.००

❖ **धनत्रयोदशी : (धनतेरस) अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद १३**

शनिवार दि. २२-१०-२०२२ : ✻ सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ ✻ ९.३० ते ११.०० शुभ ✻ ११.०० ते १२.३० अमृत

रविवार दि. २३-१०-२०२२ : ✻ सकाळी ८.०० ते ९.३० चल ✻ ९.३० ते ११.०० लाभ ✻ ११.०० ते १२.३० अमृत ✻ दुपारी २.०० ते ३.३० शुभ

❖ **महालक्ष्मी पूजन (दीपावली वही पूजन) : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ३०**

सोमवार दि. २४-१०-२०२२ : ✻ सायंकाळी ५.२४ ते ६.३० अमृत ✻ ६.३० ते ८.०० चल ✻ रात्री ११.०० ते १२.३० लाभ ✻ पहाटे २.०० ते ३.३० शुभ ✻ ३.३० ते ५.०० अमृत ✻ ५.०० ते ६.२८ चल

✻ वृषभ लग्न कुंभ नवमांश सायंकाळी ७.३६ ते ७.४८ ✻ वृषभ लग्न वृषभ नवमांश सायंकाळी ८.१७ ते ८.३० ✻ वृषभ लग्न सिंह नवमांश सायंकाळी ८.५५ ते ९.१०

(मंगळवार ता. २५-१०-२०२२ रोजी दुपारी ४.५१ ते सायंकाळी ६.१० खंडग्रास सुर्यग्रहण आहे.)

❖ **नूतन वर्ष : (वीर संवत २५४९, विक्रम संवत २०७९) कार्तिक शुध्द १**

बुधवार दि. २६-१०-२०२२ : ✻ सकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ ✻ ८.०० ते ९.३० अमृत, ✻ दुपारी ११.०० ते १२.३० शुभ

श्री शुभम् भवतु !

प्रेषक : नवीनकुमार बी. शहा – २३० पाटील प्लाझा, मित्र मंडळ चौक, पुणे ९. मो. ९८२२०९०३३९

अंधकार में काफी भटके, अब प्रकाश की ओर बढ़ें

लेखक : राष्ट्रसंत श्री गणेश मुनि शास्त्री

आज कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या है। आज की अमावस्या को, आज के दिन को हम सभी दीपावली के रूप में जानते हैं। प्रत्येक अमावस्या गहन अंधकार में डूबी हुई होती है, पर आज की अमावस्या में अंधकार की तनिक भी अवस्थिति नहीं है। आज की रात्रि में कोई, कहीं भी दृष्टिपात कर ले, उसे सर्वत्र आलोक ही आलोक अठखेलियाँ करता हुआ दिखाई देगा। अंतिम तीर्थकर भगवान महावीर के परिनिर्वाण की पावन स्मृतियाँ इस दिन के साथ जुड़ी हुई है। दीपावली का यह पावन पर्व जन-जन को जागृति का संदेश देने के लिए समुपस्थित हुआ है। दीप पर्व के सम्बन्ध में हम कह सकते हैं -

दीपावली, प्रतिपल जगने जगाने का संदेश देती है।
दीपावली, मायूस मनों में उल्लास का परिवेश देती है।
पर्व का ठीक-ठीक अध्ययन करेंगे तो यही पायेंगे बन्धु
दीपावली, महावीर की तरह महान बनने का उपदेश देती है ।।

दीपावली, दीपावली है। इस पर्व के आगमन का हर एक व्यक्ति को बेसब्री से इंतजार रहता है। दीपावली के आगमन से पूर्व ही प्राय: इसके स्वागत के लिए प्रत्येक व्यक्ति सक्रिय हो उठता है। घर, दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री, संस्थान आदि की स्वच्छता में हरएक जुट जाता है । प्रयत्न यह रहता है कि कहीं भी थोड़ी सी भी गंदगी या कचरा न रह जाए्। लोक धारणा यह है कि जिस घर में अधिक स्वच्छता अथवा अधिक प्रकाश होगा, उसी घर में लक्ष्मी का आगमन होगा एवं लक्ष्मी जी उन्हीं पर प्रसन्न होंगी।

इस सम्बन्ध में जहाँ तक मैं सोच पाया हूँ, वह यह है कि लक्ष्मी की प्रसन्नता और आगमन के लिए घर-आँगन की सफाई और बाह्य प्रकाश ही पर्याप्त नहीं है। हमें इस सम्बन्ध में चिन्तन की गहराईयों में डुबकी लगानी पड़ेगी। बाहरी स्वच्छता और प्रकाश से कहीं अधिक अपेक्षा इस बात की होती है कि मन के भीतर भी स्वच्छता और प्रकाश को लाया जाए।

❊ अंधकार और प्रकाश

अंधकार और प्रकाश के दो प्रकार है एक द्रव्य दूसरा भाव। द्रव्य अंधकार और द्रव्य प्रकाश तो हम जानते ही हैं। द्रव्य अंधकार में हमारे चर्म चक्षु काम नहीं करते, आँखें होते हुए भी हम अंधे जैसे बन जाते हैं। हमें कुछ भी दिखाई नहीं देता, पास रखी वस्तु भी नहीं सूझती। इसी तरह भाव अंधकार के रूप में मिथ्यात्व अज्ञान और अविवेक को स्वीकार किया गया है। यह हमारे ज्ञान चक्षुओं को ढंक देता है, इससे हमें सम्यक मार्ग नहीं सूझता । स्वयं अपने को ही हम नहीं जान सकते एवं ऐसी स्थिति में दुख की जो परम्परा है, वह सुदीर्घ एवं सघन बनती चली जाती है।

चीन के प्रसिध्द दार्शनिक, विचारक एवं संत कन्फ्यूशियस ने एक बार कहा था जहाँ प्रकाश है, ज्योति है, रोशनी है और लाईट है, वहाँ भय नहीं रहता और जहाँ अंधकार है, वहाँ हजारों-हजार तरह के भय-डर बने रहते हैं, कदम-कदम पर मन-मस्तिष्क में संदेह बना रहता है। रात्रि के गहन अंधकार में चोर, सर्प और जंगली जानवरों का भय रहता है। दिन के, सूर्य के प्रकाश में इनका भय नहीं रहता । व्यक्ति दिन के उजाले में सब कुछ देख सकता है, इसलिए वह नीडर, निर्भय और निर्द्वन्द्र होकर कदम बढ़ाता है। भय का जन्म अंधेरे में ही होता है, प्रकाश में नहीं यही स्थिति हमारे मन मस्तिष्क की है, जीवन की है जब तक जीवन में हमारे

भीतर में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित नहीं होती, तब तक विविध प्रकार के विकल्पों से ग्रस्त हमारी मानसिकता भययुक्त बनी रहती है।

याद रखिये, अंधकार हमारा अपना मूल स्वभाव नहीं है। हमारा अपना जो मूल स्वभाव है, वह प्रकाश है। अंधकार में हमारा अपना मन अत्यन्त घुटन एवं विकलता की अनुभूति करता है, जबकि प्रकाश में किसी भी प्रकार की घुटन एवं विकलता को अवकाश नहीं रह जाता। रात्रि में कुछ देर के लिए बिजली चली जाती है तब आप कितने विकल एवं परेशान हो उठते हैं। रह-रह कर आप सोचने लगते हैं कि कब बिजली आए और कब इस घुटन से मुक्ति मिलें।

एक बात पूछना चाहता हूँ आपसे । बाहरी अंधकार से आप इतने परेशान हो उठते हैं, पर क्या कभी आपका यह ध्यान जाता है कि हमारे भीतर में मिथ्यात्व एवं अज्ञान का कितना गहरा अंधकार परिव्याप्त है? प्रश्न है, हम कब तक इस तरह अंधेरों में घुट-घुट कर जीते रहेंगे? कब तक इन दमघोटू अंधेरों की गुलामियों को इस तरह स्वीकार करते रहेंगे? दीप पर्व सचमुच महान पर्व है। माटी के दीपों एवं विद्युत बल्बों का संयोजन करके ही हम न रह जाएँ । हम इस पर्व पर अपने भीतर में ज्ञान का, दर्शन का, चारित्र का, तप का, स्नेह और सद्भाव का, सेवा और समर्पण का दीप जलाएँ एवं चिरकाल से भीतर में आसन जमाए हुए अज्ञान, मिथ्यात्व असंयम एवं स्वार्थ के अंधेरे को दूर भगाएँ। आज से पहले हम अज्ञान और अविवेक से प्रेरित होकर जीवन को अंधकार में नष्ट करते रहे, पर अब ही सही, हम जगें और दीप पर्व पर अपने मन में एक संकल्प करें कि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् मैं अंधकार से निकलकर ज्योति की ओर, प्रकाश की ओर गमन करूँ । कहा भी है -

खूब रह लिये अंधेरों में अगणित कष्ट उठाए ।
नव आलोक की यात्रा करके, अपनी मंजिल पाएँ ।।

❊ दीप पर्व की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

दीप- पर्व पर हम अपने भीतर में संयम साधना एवं परमार्थ का प्रकाश पैदा करें, तभी दीपावली के इस दीप पर्व की सार्थकता सिध्द होगी। अब दीप पर्व की जो ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, इस सम्बन्ध में आवश्यक रूप से कुछ जान लेना जरूरी है। दीप पर्व के साथ में सैकड़ों प्रसंग जुड़े हैं और वे सभी प्रसंग हमें संप्रेरित करते हैं। कुछ प्रसंगों का उल्लेख करना मैं आवश्यक समझ रहा हूँ ।

जैन परम्परा के अनुसार भगवान महावीर के परिनिर्वाण एवं गणधर गौतम को केवल्यज्ञान की प्राप्ति, इस तरह दीप पर्व के साथ जुड़ी हुई प्रमुख रूप से दो घटनाएँ हैं । भगवान महावीर का अंतिम वर्षावास पावापुरी में था। तीन दिनों तक भगवान महावीर हस्तिपाल नरेश आदि अनेक राजा महाराजा, श्रेष्ठीजन एवं श्रावक-श्राविकाओं को सहज रूप से उद्बोधन प्रदान करते रहे एवं अमावस्या की अर्धरात्रि में समग्र कर्मों का क्षय करके महावीर अपनी गंतव्य स्थिति तक जा पहुँचे। इस स्थिति को देखकर समवसरण में समुपस्थित राजाओं के अंतर में एक विचार उभरा -

गए से भावुज्जुए।

अर्थात् भाव उद्योत, भाव-प्रकाश तो चला गया है। ऐसी स्थिति में उन्होंने सामूहिक स्तर पर एक निर्णय किया -

दव्वुज्जुए पवत्तेमो ।

अर्थात् हमें अब द्रव्य उद्योत करना चाहिए और उन्होंने ऐसा ही किया। देवों ने भी भावातिरेक में दीप पर्व आयोजन की व्यवस्था की। आम जन-मानस ने अपने आराध्य ईश प्रभु महावीर के प्रति बाह्यालोक के द्वारा श्रद्धा का प्रकटीकरण किया। यही आलोक पर्व के संरचना की परंपरा बन गई।

इसी तरह इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका विजय करके चौदह वर्ष के बाद अयोध्या में लौटे थे। उनके मंगल आगमन के उपलक्ष्य में असीम प्रसन्नता के

साथ अयोध्यावासियों ने अपने घरों और सम्पूर्ण नगर को दीप पंक्तियों से जगमगाकर राम का अभिनंदन किया। इसी तरह श्रीकृष्ण ने दीपावली से एक दिन पूर्व चतुर्दशी को नरकासुर दैत्य की अनुचित प्रवृत्तियों से त्रस्त तत्कालीन जन-जीवन को नरकासुर का वध करके मुक्त किया था। इसकी खुशी को अभिव्यक्त करने के लिए लोगों ने दीप प्रज्ज्वलित किये। तभी से दीपावली मनाई जा रही है।

महात्मा बुध्द ने अपने शिष्य आनंद को आत्मानंद प्राप्त करने के लिए 'अप्प दीपो भव' अर्थात् स्वयं अपने दीप बनो, का दिव्य संदेश इसी दिन प्रदान किया। सिक्ख गुरु श्री हरगोविन्दसिंह जी ने जेल मंदिर से स्वर्ण मंदिर तक की विजय यात्रा इसी दिन सम्पन्न की। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद इसी दिन स्वर्गारोही हुए। स्वामी रामतीर्थ ने इसी दिन गंगा की लहरों में समाधि ली। स्वामी विवेकानंद ने इस पावन पर्व पर रामकृष्ण परमहंस का सानिध्य प्राप्त किया। भूदान यज्ञ के कान्तदृष्टा सर्वोदय के संबल विनोबा भावे ने इसी दिन को अपनी इच्छा मृत्यु के रूप में चुना। पाँच दिन पहले ही उन्होंने आहार का त्याग कर दिया था। दवाइयाँ बन्द कर दी और कहा कि अब मुझे अकेला छोड दीजिये, अब मेरा अंतिम समय आ गया है। पवनार आश्रम में दीवाली के दिन इस महान संत ने समाधिपूर्वक मरण का वरण किया।

इसी तरह का एक प्रसंग वैदिक पुराणों में आता है। देवलोक की विजय की प्रसन्नता स्वरूप कहा जाता है कि राजा बलि ने मंगल महोत्सव का समायोजन किया। उसने अपने दोनों हाथों में दो प्रज्ज्वलित दीप लिये। और देवनदी - सुरसरि में प्रवाहित करते हुए उनका नाम करण - आशादीप और ज्ञानदीप के रूप में किया। अभिप्राय यह था कि सदैव अपने हृदय में आशा की ज्योति को जागृत रखो एवं निराशा के अंधकार को अपने करीब मत आने दो।

जनता प्राय: अनुकरण प्रधान होती है। राजा का अनुकरण प्रजा ने किया हजारों-लाखों प्रज्ज्वलित दीपक देवनदी सुरसरि में बहते हुए आए तो पृथ्वीवासियों का विस्मित एवं प्रमुक्ति होना स्वाभाविक था। उन्होंने भी अनुकरण किया और वह रात दीप पंक्तियों से जगमगा उठी। यह एक पौराणिक मान्यता है जो जीवन को आशा, विश्वास और ज्ञान के आलोक से आलोकित करने का इंगित करती है।

❊ महत्त्वपूर्ण पर्व

इन सभी उदाहरणों से यह अधिकार पूर्वक कहा जा सकता है कि दीप पर्व का महत्व असंदिग्ध है हमने इसके महत्व को आज सीमित कर दिया है, केवल मकानों दुकानों की सफाई एवं लक्ष्मी पूजन तक ही, जबकि इससे आगे इसके मूल में जो उदार भावनाएँ छिपी पड़ी है, उनसे हमें जुड़ना चाहिए। दीप पर्व एकांततः भौतिक पर्व ही नहीं है, अपितु आध्यात्मिक पर्व भी है। इस पर्व की आराधना अधिकाधिक जागरूकता पूर्वक करने का हमारा लक्ष्य बनना चाहिए।

बिजली आदि के अनावश्यक संयोजन एवं आतिशबाजी में अपने अर्थ एवं समय की प्रयुक्ति किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कही जा सकती। आतिशबाजी से जो हिंसाएँ भड़कती है, उन्हें नजरदांज नहीं करना चाहिए। आश्चर्य तो उस समय होता है, जब समझदार कहे जाने वाले घर एवं समाज के मुखियाजन भी इस पाप में मददगार बनते हैं। दीपावली के अवसर पर इस तरह की सामग्री का पुस्तक के रूप में प्रकाशन करवाकर वितरीत करवाना चाहिए, जिसे पढ़कर आम जन मानस आतिशबाजी से होने वाली हानि तथा हिंसा से स्वयं को बचा सके।

एक बात और है, जिस पर ध्यान देना मानव मात्र का कर्तव्य है। दीपावली के अवसर पर हम मिठाइयाँ आदि खाते रहें और हमारे ही कई साथी भूख के मारे छटपटाते रहें तो यह स्वार्थभरा दृष्टिकोण है । हमें किसी को खिलाकर ही कुछ खाना चाहिए। अपना पेट तो पशु भी भर लिया करता है। पर यह जरूरी है कि हम अपने समाज, जाति का बराबर खयाल रखें। मानवीय

भावनाओं की जीवंतता वातावरण को नई स्फूर्ति सौंपती है। दीपावली पर्व पुण्य कमाने का पर्व है। नौ प्रकार से पुण्यबंध होता है। यथा संभव हमें पुण्य की आराधना में पीछे नहीं रहना चाहिए।

दीपावली के पावन अवसर पर यह अभ्यास भी रहे कि हम अपने जीवन में अच्छाई का समावेश करें और बुराइयों से अपना दामन बचाएँ। सद्गुणों से समृध्द जीवन न केवल स्वयं के लिए, अपितु अन्य जनों के लिए भी वरदान सिध्द होता है । दीपावली पर्व पर अनिवार्य रूप से समय निकालकर जप तप आदि की प्रवृत्ति को भी अपने घर में सामूहिकता देना, इस दृष्टि से श्रेष्ठ है। यदि दीपावली पर्व पर इस तरह अपने जीवन को सद्गुणों से आलोकित कर पाएँ तो निश्चित रूप से महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रध्दाभिव्यक्ति तो होगी ही हमारा जीवन भी सफल सार्थक बन सकेगा। बस इसी मंगल मैत्री भाव के साथ

अंधकार में काफी भटके, अब प्रकाश की ओर बढ़ें।
आत्मोत्थान साधने हेतु, गुणस्थान सोपान चढ़ें ।। ●

क्या पटाखे फोड़कर आप अहिंसा व दया धर्म का पालन कर पायेंगे ?
क्या पटाखे फोड़कर आप मानवता को कायम रख पायेंगे ?
जरा सोचिये – पटाखे फोड़ने से क्या मिला ?

* भगवान एवं संतों की वाणी का अपमान
* करोडों की सम्पत्ति का नुकसान
* अनंत निर्दोष जीवों की हत्या
* आँखें एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर
* धन की बर्बादी
* वायु प्रदूषण की अधिकता
* गंदगी का साम्राज्य
* शारीरिक क्षति एवं जन हानि
* अनंत पाप का बंध
* समय की बर्बादी
* क्षणिक मनोरंजन के लिए अनंत जीवों की हत्या क्यों ?
* हमें बम विस्फोट में मरने वाले व्यक्तियों से सहानुभूति होती है तो फिर अनंत जीवों को पटाखों रुपी बम विस्फोट से मारने जैसी निर्दयता क्यों ?
* हमें तो अग्नि की आँच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं । छोटी सी आवाज से हमारे बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत जीवों को मौत के घाट उतरते देख कर हमारे हाथ क्यों नहीं काँपते ?

अत: जियो और जीने दो का अमर संदेश देने वाले भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर हिंसा का तांडव मत करिये । राम, बुध्द, नानक एवं संतों – महापुरुषों के अहिंसा संदेश का पालन कीजिए । सुख शांति के पर्व दीपावली पर अन्य जीवों के यमराज ना बनें ।

दीपावली पर्व हिंसा के यमराज का नहीं, अहिंसा के सम्राट भगवान महावीर के निर्वाण का महापर्व है । जरा सोचिए – प्रतिवर्ष पटाखों से अनेक लोग अपंग, पटाखों की आग से देश में प्रतिवर्ष करोडों की सम्पत्ति का नुकसान, पटाखों से प्रतिवर्ष बच्चों की आँखों की रोशनी कम या समाप्त हो जाती है । पटाखा फैक्ट्री में सैकड़ों कर्मचारियों की दुर्घटनाओं में मृत्यु हो जाती है ।

पटाखे मत फोडीये – अहिंसा और दया धर्म का पालन कीजिए ।

प्रेषक : महेश नाहटा, नगरी (छ.ग), मो. : ०९४०६२०१३५१